

कृषि अवसंरचना कोष

प्रलिस के लयः

कसलन उत्पादक संगठन (FPOs), स्वयं सहायता समूह (SHGs), प्रबंधन सूचना प्रणाली (MIS), नाबार्ड, पराली दहन, फसल ववधलकरण, वर्षा जल संचयन, जेनेटकल इंजीनयरलंग ।

मेन्स के लयः

कृषल अवसंरचना कोष (AIF), फसल कटाई बाद प्रबंधन से संबंधतल मुददे ।

चर्चा में क्यों?

कृषल अवसंरचना कोष (Agriculture Infrastructure Fund- AIF) ने फसल कटाई के बाद के अवसंरचना और सामुदायक कृषल संपत्तल जैसी कृषल परयोजनाओं के लयल 30,000 करोड़ रुपए से अधकल की पूंजी जुटाई है ।

कृषल अवसंरचना कोष:

परचलः

- AIF एक वतलतपोषण सुवधल है जसल **जुलाई 2020** में शुरू कयल गयल थल ।
- इसकल उद्देश्य कसलनों, कृषल-उद्यमयलं, कसलन समूहों जैसे **कसलन उत्पादक संगठनों** (FPO), **स्वयं सहायता समूहों** (SHG), **संयुक्त देयता समूहों** (Joint Liability Groups- JLGs) आदल और कई अन्य को **फसल कटाई के बाद प्रबंधन बुनयलदी ढाँचे** तथल देश भर में सामुदायक कृषल संपत्तल कल नरलमाण करने के लयल वतलतीय सहायता प्रदान करना है ।

वशेषता:

- AIF 3% ब्याज सब्सलडी के रूप में सहायता प्रदान करता है, **क्रेडलटल गारंटी फंड ट्रस्ट फॉर माइक्रो एंड स्मॉल एंटरप्राइजेज़ (CGTMSE) कार्यक्रम** के माध्यम से 2 करोड़ रुपए तक के ःरण के लयल क्रेडलटल गारंटी देतल है । अन्य केंद्र एवं राज्य सरकार के कार्यकरमों के साथ वललय करने की सुवधल भी प्रदान करता है ।
- AIF कृषल बुनयलदी ढाँचे कल नरलमाण और आधुनकलकरण करके **फसल कटाई के बाद के नुकसान को कम करने में कलफी योगदान दे रहा है**, जसलके अंतर्गत सब्जलं के लयल प्राथमकल प्रसंसकरण केंद्र, कृषल मशीनरी के करलये के लयल हलई-टेक हब/केंद्र शामिल हैं ।

प्रबंधन:

- इस फंड कल प्रबंधन और देख-रेख एक ऑनलाइन **प्रबंधन सूचना प्रणाली (MIS) प्लेटफॉर्म** के माध्यम से कयल जलएगल । यह सभी योग्य संस्थाओं को इस फंड के तहत ःरण के लयल आवेदन करने में सकषम बनाएगल ।
 - **वास्तवकल समय** अर्थात् रयलल टाइम नगरलनी और प्रभावी प्रतकरयल सुनशलचित करने के लयल राषट्रीय, राज्य एवं ज़लल स्तर की नगरलनी समतलं के गठन कयल जलएगल ।

पोस्ट-हलरवेस्ट मैनेजमेंट:

परचलः

- **कटाई के बाद के प्रबंधन (Post-harvest Management)** से तात्पर्य उन गतवधलं तथल तकनीकों से है जनकल उपयोग फसलों की कटाई के बाद उनहें सुरकषतल और संरकषतल करने के लयल कयल जलतल है ।
 - इसमें **सफाई, छंटाई, ग्रेडलंग, पैकेजलंग, भंडारण और परवलहन** जैसी गतवधलं शामिल हैं ।
- कटाई के बाद के प्रबंधन कल लकष्य फसलों की गुणवत्ता और सुरकषा को बनाए रखने के साथ-साथ उनकी शेलफ लाइफ को बढ़ानल है, ताकल बाद में वह बेचने और खलदय योग्य हों ।

चुनौतलं:

- ःरण तक सुवधलजनक पहुँच कल अभावः छोटे और सीमांत कसलनों के लयल सुवधलजनक ःरण उपलब्ध नहीं है । **नाबार्ड द्वारा वर्ष 2018** में कयल एक सर्वेक्षण के अनुसार छोटे भूखंड आकार के स्वामी कसलनों ने बड़े भूखंड आकार (> 2 हेक्टेयर) के स्वामी कसलनों की

तुलना में गैर-संस्थागत ऋणदाताओं से अधिक ऋण लिया था।

- यह इंगति करता है कि छोटे और सीमांत किसान बड़े किसानों की तुलना में ऋण के अनौपचारिक स्रोतों (जो अधिक ब्याज भी लेते हैं) पर अधिक निर्भरता रखते हैं।
- पराली दहन: मानव श्रम की कमी, खेत से फसल अवशेषों को हटाने की उच्च लागत और फसलों की यंत्रिक कटाई के कारण खेतों में अवशेषों को जलाने या 'पराली दहन' (Stubble Burning) की समस्या गहरी होती जा रही है जो उत्तर भारत में वायु प्रदूषण में प्रमुखता से योगदान करती है।
- आधारभूत बाधाएँ: अपर्याप्त कोल्ड चैन इंफ्रास्ट्रक्चर के कारण फार्म गेट से 30% से अधिक उत्पादन नष्ट हो जाता है।
 - नीति आयोग के एक अध्ययन में अनुमान लगाया गया है कि वार्षिक फसल की कटाई के बाद लगभग 90,000 करोड़ रुपए का नुकसान होगा।
 - मौसम के अनुकूल सड़कों और कनेक्टिविटी के अभाव में आपूर्ति अनियमित हो जाती है।

भारत कृषि से अधिकतम लाभ कैसे प्राप्त कर सकता है?

- पारंपरिक और सीमांत तकनीकों का एकीकरण: पौधों के पोषक तत्वों हेतु **वर्षा जल संचयन** और **जैविक अपशुद्धियों का पुनर्चक्रण**, कीट प्रबंधन आदि पारंपरिक तकनीकों के उदाहरण हैं जिनका उपयोग **उच्च उत्पादकता प्राप्त करने के लिये** ऊतक संवर्धन, **जेनेटिक इंजीनियरिंग** जैसी सीमांत तकनीकों के पूरक के रूप में किया जा सकता है।
- कृषि अधिषेध प्रबंधन का उन्नयन: कटाई के बाद की देखभाल, बीज, **उर्वरक** और **कृषि रसायन गुणवत्ता वनियमन** हेतु अवसंरचनात्मक ढाँचे के उन्नयन एवं विकास कार्यक्रम की आवश्यकता है।
 - इसके अतिरिक्त, कृषि केंद्रों की ग्रेडिंग और मानकीकरण को बढ़ावा देना आवश्यक है।
- बाजार एकीकरण के माध्यम से अतिरिक्त प्रतिलाभ प्राप्त करना: **घरेलू बाजारों को सुव्यवस्थित करने और स्थानीय बाजारों को राष्ट्रीय एवं वैश्विक बाजारों से जोड़ने के लिये अवसंरचनात्मक ढाँचों तथा संस्थानों को स्थापित करने** की आवश्यकता है।
 - घरेलू और वैश्विक बाजारों के बीच सहज एकीकरण की सुविधा के लिये और **व्यापार उदारीकरण** को और अधिक प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिये भारत को एक नोडल संस्था की आवश्यकता है जो **वैश्व और घरेलू मूल्य वचिलनों** की बारीकी से निगरानी कर सके और बड़ी हानि से बचने के लिये समय पर और उचित उपाय कर सके।

यूपीएससी सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQ)

??????????:

प्रश्न. परमाकलचर कृषि पारंपरिक रासायनिक कृषि से कैसे अलग है? (2021)

1. परमाकलचर कृषि मोनोकलचर प्रथाओं को हतोत्साहित करती है लेकिन पारंपरिक रासायनिक खेती में मोनोकलचर प्रथाएँ प्रमुख हैं।
2. पारंपरिक रासायनिक कृषि से मृदा की लवणता में वृद्धि हो सकती है लेकिन परमाकलचर कृषि में ऐसी घटना नहीं देखी जाती है।
3. अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों में पारंपरिक रासायनिक कृषि आसानी से संभव है लेकिन ऐसे क्षेत्रों में परमाकलचर कृषि इतनी आसानी से संभव नहीं है।
4. परमाकलचर कृषि में मलचगि का अभ्यास बहुत महत्त्वपूर्ण है लेकिन पारंपरिक रासायनिक कृषि में ऐसा ज़रूरी नहीं है।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये।

- (a) केवल 1 और 3
- (b) केवल 1, 2 और 4
- (c) केवल 4
- (d) केवल 2 और 3

उत्तर: (b)

प्रश्न. नमिनलखिति में से कौन-सी 'मशरति खेती' की प्रमुख वशिषता है? (2012)

- (a) नकदी फसलों और खाद्य फसलों दोनों की खेती
- (b) एक ही खेत में दो या दो से अधिक फसलों की खेती
- (c) पशुओं का पालन और फसलों की एक साथ खेती
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर: (c)

प्रश्न. सूक्ष्म सचिई के संदर्भ में नमिनलखिति कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं? (2011)

1. उर्वरक/पोषक तत्वों के नुकसान को कम किया जा सकता है।
2. यह शुष्क भूमि की खेती में सचिई का एकमात्र साधन है।

3. खेती के कुछ क्षेत्रों में घटते भूजल स्तर की जाँच की जा सकती है।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (c)

प्रश्न. फसल विविधीकरण के समक्ष वर्तमान चुनौतियाँ क्या हैं? उभरती प्रौद्योगिकियाँ फसल विविधीकरण के लिये अवसर कैसे प्रदान करती हैं? (मुख्य परीक्षा, 2021)

स्रोत: पी.आई.बी.

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/agriculture-infrastructure-fund-2>

